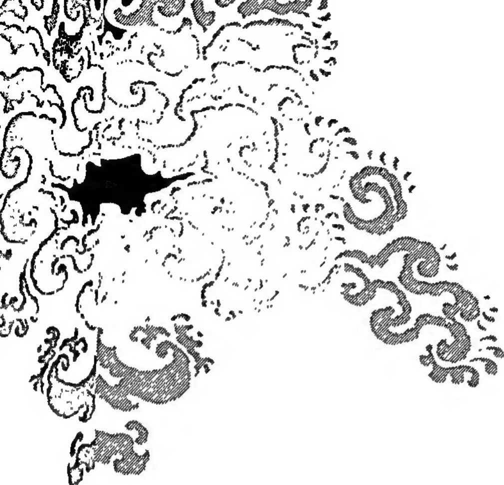
साया कोई लम्बा न था



आधा को

वाग्देवी प्रकाशन
बीकानेर



शीन. काफ़. निज़ाम



प्रथम संस्करण . 1988

मूल्य . पैंतीस रुपये मात्र

आवरण : तूलिका

प्रकाशक : वाग्देवी प्रकाशन
सुगन निवास, चन्दन सागर
बीकानेर-334 001

मुद्रक : साँखला प्रिण्टर्स
चन्दन सागर, बीकानेर

ISBN 81-85127-11-5

SAYA KOI LAMBA NA THA (*Urdu Poetry*) by Sheen Kaaf Nizam
Rs 35.00

गवरी—मेरी माँ—के लिए

अनुक्रम

गज़लें

नज़्में

[illegible]

दीवारो-दर ख़मोश दरीचों प' यास है
क्या जाने शहर किसलिए इतना उदास है

बिछड़े हुओं की याद कहीं आस-पास है
बारिश की पहली शाम का मंजर उदास है

उन की किसे ख़बर है पता किस से पूछिए
बिछड़े हुओं की याद यहाँ किस के पास है

इस सोच में खड़ा हूँ, उसे क्या जवाब दूँ
वो मुझ से पूछता है कि तू क्यूँ उदास है

अब के बरस भी वो तो मुबकसर ही जायेगा
सावन से क्या बुझेगी वो सहरा की प्यास है

लगता है जंगलों की जमीं पर बसी है वो
बस्ती में इतना किसलिए ख़ौफ़ो-हिरास है

बारिश ने जाते-जाते पलट कर कहा 'निज़ाम'
तेरी ये उम्र है कि सुलगती कपास है ।

दीवारो-दर=दीवार और दरवाज़ा. यास=निराशा मंज़र=दृश्य. मुबक्सर=लज्जित ख़ौफ़ो-हिरास=भय और सत्रास.

चाल हम सब से चल गया सूरज
कितना आगे निकल गया सूरज

जलते जलते पिघल भी सकता है
जब सुना तो दहल गया सूरज

रोज की तरह कल भी आऊँगा
आज भी सब को छल गया सूरज

सर छुपाने को जब जगह न मिली
कितने चेहरों मे ढल गया सूरज

एक बदली जो पास से गुजरी
रग कितने बदल गया सूरज

तह करो ख़्वाब शब समेटो अब
फिर सफर पर निकल गया सूरज

डर गया शहर के मकानों से
वक़्त से पहले ढल गया सूरज

एक दिन फिर लौट कर मैं आऊँगा कहता था वो
मंजरों मे आँख-सा वस जाऊँगा कहता था वो

मौसमों के आईनों में शक्ल देखेंगे शजर
एक तिनका चोंच में ले आऊँगा कहता था वो

कश्तियाँ काग़ज की वच्चे छोड़ कर उठ जायेंगे
नद्दियों की मौज से टकराऊँगा कहता था वो

जव जमी से आस्माँ तक इक खला रह जायेगा
दूरियों की दलदलों से आऊँगा कहता था वो

जुल्मतों में डूव जायेगा जमाने का जमीर
आस्माँ से आग ले कर आऊँगा कहता था वो

कोंपलें जव कसमसायेंगी नुमू के वास्ते
खुद को खोने के लिए फिर आऊँगा कहता था वो

गर्दिशें ही गर्दिशें हों गोल में जव भी 'निजाम'
मैं खला में खाक-सा खो जाऊँगा कहता था वो

मजरो=दृश्यों. शजर=पेड. खला=शून्य. जुल्मतो=अन्धेरों. जमीर=विवेक.
नुमू=उगने के लिए. गर्दिशें ही गर्दिशें=चक्कर ही चक्कर गोल=झुण्ड.

जाने कैसा शहर था घर में भी डर बाकी रहा
रोशनी तो छुप गई साया मगर बाक़ी रहा

एक इक घर शहर का बहता गया सैलाब में
जाने ऐसा क्या था उस में, उस का घर बाक़ी रहा

तोड कर सारे तअल्लुक जब जुदा दोनों हुए
बीच में कैसे न जाने इक अगर बाकी रहा

सर तो नेजे पर रहा और धड़ मिला जा धूल में
एक क़तरा ख़ून का बस ख़ाक पर बाकी रहा

मश्वरा अब क्या करे, अक्सर हुआ ऐसा 'निजाम'
रास्ते सब चुक गये, लेकिन सफ़र बाकी रहा

सैलाब=बाढ़ नेज़े=भाले.

जायेगा किधर सम्ते-सफ़र भी तो नही है
ठहरेगा कहाँ अब की शजर भी तो नही है

इक नाम भला-सा था जिसे भूल चुके हैं
दस्तक कहाँ देनी है खबर भी तो नही है

जी में तो ये आता है जमाने को खुदा दें
इस बार मगर पास हुनर भी तो नही है

अज्दाद के अस्रार रकम कैसे करेंगे
साबित कोई शहरों में खण्डर भी तो नहीं है

जो बोलना जाने है वही बोल न पायें
उस शख़्स का अब शहर में डर भी तो नही है

सम्ते - सफ़र=यात्रा की दिशा. शजर=पेड़.
अज्दाद=पूर्वज. अस्रार=रहस्य. रकम=लिखना.

याद आया बिछड़ा दोस्त कोई पिछले साल का
गलियों के रुख़ प' देख के गाज़ा गुलाल का

फिर घूम फिर के आ गया मौसम मलाल का
फिर हम है और हिसाब है हिज्रो-विसाल का

शब माँगता था माह लगन माहो-साल का
सीने मे सो रहा था समुन्दर सवाल का

उभरे हैं दिन के दायरे रातों की रेत पर
इक सिलसिला है अब ख़तो-ख़ालो-ख़याल का

कैसे बतायें जश्न में क्यूँ हम नही शरीक
है दिन यही तो उस से बिछड़ने के साल का

रुख़ = चेहरा, गाज़ा = पोउडर, मलाल = दुख, हिज्रो-विसाल = वियोग और मिलन, शब = रात माह = चन्द्रमा, लगन = चव माहो-साल = मास और वर्ष, ख़तो-ख़ालो-ख़याल = रेखा, बिन्दु और विचार.

एक इक जिस की अदा हम को भी हरजाई लगे
लेकिन उस को चाहते रहने में दानाई लगे

खाक-सी उड़ती हुई आँखों में चेहरा जर्द है
शहर का हर शख्स अब उस का ही सौदाई लगे

इन दरो-दीवार को जैसे कभी देखा न था
अजनबी क्यूँ इतनी अपने घर की अंगनाई लगे

जिस तरह चटखे बदन रह रह के कोई नाज से
वैसे ही आंसू मुझे यादों की अंगड़ाई लगे

हर गली कूचे में चर्चा अब हमारे कुर्ब का
नाम लगता है उसे और मुझ को रुस्वाई लगे

फिर हुई पत्ते की खड़कन फिर कहीं पछी उड़ा
याद कोई फिर मिरे दरवाजे तक आई लगे

बस सुराबों की समाहत के सिवा कुछ भी नहीं
दूर से जिन आँखों में झीलों-सी गहराई लगे

दानाई=बुद्धिमत्ता जर्द=पीला. सौदाई=प्रेमी, उन्मादी. दरो-दीवार=दरवाजा और दीवार. कुर्ब=सामीप्य रुस्वाई=बदनामी. सुराबों=मृगतृष्णाओं. समाहत=बाहुल्य, बहादुरी.

मंगल मातम मन्दर आँख
अख़गर अजगर आज़र आँख

ख़िलअत ख़ातिर ख़ंजर आँख
ख़ुत्वा ख़्वाहिश ख़ुदसर आँख

मरकज मरकज मातिर माक़
मौसम मौसम मजहर आँख

पुष्कर पानी पीपल पाठ
इम्काँ इम्काँ अक्षर आँख

पानी पेड़ परिन्दा पाप
मंजर ता पसमंजर आँख

हर पर्दे का पहरा चाक
जब ठहरी पैगम्बर आँख

आब, सराब, मुकाम, 'निजाम'
अन्दर मजर बाहर आँख

मातम=सन्नाटा, मृत्यु-शोक अख़गर=चिंगारी. आज़र=अरब का प्रसिद्ध शिल्पी, ह
इब्राहीम के पिता या चाचा, आज़र की बनाई मूर्तियों को ह इब्राहीम ने तोड़ा। काबे
नींव आपने रखी. ख़िलअत=राजा की ओर से सम्मानार्थ दिए जाने वाले वस्त्रा
ख़ातिर=वह विचार जो मन मे पैदा हो, निमित्त, सत्कार ख़ुत्वा=प्राक्कथन, धर्म
पदेश ख़ुदसर=उद्दण्ड, विद्रोही मरकज=केन्द्र. मातिर=बरसने वाला. माक़=
आँख का कोना. मजहर=प्रकट होने का स्थान. इम्काँ=सम्भावना. मजर=दृ
पसमंजर=पृष्ठभूमि चाक=फटना. आब=पानी सराब=मृगतृष्णा. मुकाम=प्रतिष्ठ

सरनगू हैं साअतों के सिलसिले सहमे हुए
दूरियाँ ही दूरियाँ हैं फ़ासले ही फ़ासले

दस्तकें देती फिरे हैं क्यूँ हवाएँ शाम से
झाँक कर कोई तो देखे कोई दरवाजा खुले

जागने की ज़िन्दगी और इन्तजारों के अलाव
सो गये कितने ही मौसम रास्ता तकते हुए

मौसमों का बोझ तन्हा सह सकेगा या नहीं
पेड़ पर जितने भी थे पत्ते पुराने झड़ गए

सूरतें ही सूरतें थीं सामने फैली हुईं
हम मगर मा'नी ही सूरत के ग़लत समझे रहे

एक फिरता आस्माँ आँखों में अलसाया हुआ
और इक तूफ़ाँ को हैं पलकें अभी रोके हुए

सरनगू=सर झुकाये हुए. साअतों=पलों. तन्हा=अकेला. मा'नी=अर्थ

शाख़ मेरी न अब समर मेरा
अख़्तियार अब है आँख भर मेरा

आईने में तो अक्स है लेकिन
मार डालेगा मुझको डर मेरा

आस्मानों प' तू रहा ख़ामोश
घर गया तेरे नाम पर मेरा

मैं ने सिज्दे में सर झुकाया था
ले गये सर उतार कर मेरा

दश्तो-सहरा उजाड़ आया हूँ
ढूँढता हूँ कहाँ है घर मेरा

दस्तो-वाज़ू लिये जवाँ मत ले
आख़िरी पर तो मत कतर मेरा

मू-ब-मू कुछ सिमट रहा है 'निज़ाम'
और चर्चा है दर-ब-दर मेरा

शाख़=टहनी समर=फल अक्स=प्रतिबिम्ब क़तअ=चतुष्पदी (इस चतुष्पदी का संकेत हुसैन की तरफ़ है, जिन्होंने करबला में शहादत पाई और जिनकी याद में मुहर्रम के महीने में ताज़ीये निकलते हैं). सिज्दे=नमाज़ में की जाने वाली दण्डवत् दश्तो-सहरा=जंगल और वह स्थान जहाँ कुछ न उगे दस्तो-बाज़ू=हाथ और भुजा मू-ब-मू=रोम-रोम. दर-ब-दर=घर-घर

ख़्वाब में खोया हुआ जब कोई आहू चमका
दश्त के दिल में कहीं याद का जुगनू चमका

रात भर ख़ुशबू को मिलता रहा ख़्वाबों का ख़िराज
जब कभी शाम ढले चाँद लबे-जू चमका

हू-ब-हू फैल गई कोई किरन-सी हरसू
याद आया कि तसव्वुर में मिरे तू चमका

छू गई सुब्ह को जाते हुए जाड़े की हवा
यूँ लगा जैसे लहू में कोई जुगनू चमका

याद का बाब कोई तू कि मिरा अपना वजूद
बाद मुद्दत के मिज़ा पर कोई आँसू चमका

आहू=हिरण ख़िराज=अधीन राज्य द्वारा दिया जाने वाला कर
लबे-जू=नदी का किनारा हू-ब-हू=शून्य से शून्य तक. हर सू=
हर तरफ़ बाब=अध्याय. वजूद=अस्तित्व मिज़ा=पलक.

अब ख़यालों में है न ख़्वाबों में
नाम जिन के लिखे किताबों में

आँख सूनी है आस्माँ वीराँ
आब अगर है तो है सराबों में

रात और दिन के साथ साँसें भी
उम्र तू है कहाँ हिसाबों में

अब के मौसम मे क्या हुआ उसको
क्यूँ ख़ुलूस अब नही ख़िताबो मे

जिन्दगी मे न पा सके जिन को
ढूँढते है उन्हें किताबों मे

ये सुना है निजाम नाम नहीं
तेरे बदले हुए निसाबों मे

वो थमा भी तो क्या करूँगा 'निजाम'
फँस गए पाँव हो रकाबों मे

आब=पानी. सराबों=मृगतृष्णाओं ख़ुलूस=निष्कपटता.
ख़िताबों=सम्बोधनों
निसाबों=पाठ्यक्रमों

मेरे वहमो-गुमान से बाहर
वो है दोनों जहान से बाहर

अब ज़मी आस्मान लगती है
हो गये पर उड़ान से बाहर

मुझ को उस की तलाश है अब की
हो गया है जो ध्यान से बाहर

दास्तानों में ढूंढता हूँ मैं
वो ज़बानो-बयान से बाहर

कोहसारों मे अक्स पैंवस्ता
एक चेहरा चटान से बाहर

कौन जाने कि किस तरफ़ जाये
घर निकल कर मकान से बाहर

खुश्क पत्ते-सा कांपता है 'निज़ाम'
तीर निकला कमान से बाहर

वहमो-गुमान=संदेह और कल्पना-कुधारणा ज़बानो-बयान=भाषा और वर्णन. कोहसारों=पर्वतों अक्स=प्रतिबिम्ब. पैंवस्ता=मिला हुआ, सटा हुआ.

अपनी पलकें वो बन्द रखता है
जाने कैसी पसन्द रखता है

खुद को कहता है आस्माँ पैमा
कितनी ओछी कमन्द रखता है

मारा जायेगा देखना इक दिन
क्यूँ दिले-दर्दमन्द रखता है

साथ वाले खफ़ा खता ये है
क्यूँ इरादे बुलन्द रखता है

धूप से सामना न हो जाये
घर के दरवाजे बन्द रखता है

आस्माँ पैमा=आसमान नापने वाला दिले-दर्दमन्द=करुण हृदय.

मेरी गजलों मे ढल गया होगा
जाने कितना बदल गया होगा

धूप सर पर उतर गई होगी
चांद चेहरे का ढल गया होगा

बेसबब अश्क वह नहीं सकते
कोई पत्थर पिघल गया होगा

रास्तों को वो जानता कब था
पांव ही था फिसल गया होगा

मंजिलें दूर क्यूं हुई है 'निजाम'
रस्ता रस्ता बदल गया होगा

मकानो-जमाँ का सफर एक लम्हा
खला-ता-खला की खबर एक लम्हा

हमारा तुम्हारा सफ़र एक लम्हा
तमाशा-ए-रक्से-शरर एक लम्हा

फुगाँ लब फ़ज़ाओं के मग्मूम मौसम
दरकता हुआ दर-ब-दर एक लम्हा

क़यामत हुई क़ाफ़िले से बिछड़ना
भटकता रहा उम्र भर एक लम्हा

मकानो-जमाँ=अन्तरिक्ष तथा समय. खला ता खला=शून्य से शून्य तक तमाशा-ए-रक्से-शरर=चिंगारी के नृत्य का दृश्य. फुगाँ लब फज़ाओं=आर्तनाद मय वातावरण. मग्मूम=दुखित दर-ब-दर=घर घर

कही से बोलता कोई नही है
तो बस्ती में भी क्या कोई नही है

मिरा जो तुझ से भी भरने लगा है
अगरचे दूसरा कोई नही है

कई सदियों की दूरी दर्मियाँ है
बजाहिर फ़ासला कोई नहीं है

मैं सहरा में सदाएँ दे रहा हूँ
मिरा भी हमनवा कोई नही है

क़ुतुबख़ानो में अब रख दो हमें भी
हमे भी देखता कोई नहीं है

सभी के दम घुटे जाते है लेकिन
खिड़कियाँ खोलता कोई नही है

बजाहिर=प्रत्यक्षत . सहरा=निर्जन स्थान. सदाएँ=आह्वान का बहुवचन.
हमनवा=आवाज मे आवाज मिलाने वाला. क़ुतुबख़ानो=पुस्तकालयों.

मैं मौसमों की मसाफ़त का दास्ताँगो हूँ
उफुक उफुक़ से मगर फूटता फसाना वो

वही तो है मुझे किस्तों में काटने वाला
मै एक जू-ए-रवाँ हूँ मिरा जमाना वो

हमारे रिश्तों को समझे तो कोई क्या समझे
मैं उस की ठौर हूँ और है मिरा ठिकाना वो

पुराने ज़ख़्म कई दिल में टीस बन के उठे
नये सफ़र प' हुआ जब कभी रवाना वो

दयारे-हिज्र के जलते उमसते लम्हों मे
घटा है याद तो बरसात का बहाना वो

किसी का कुछ नहीं हो कर भी सब का सब कुछ था
नदी के पार जो इक पेड था पुराना वो

मसाफ़त=यात्रा दास्ताँगो=दास्तां कहने वाला उफुक उफुक=क्षितिज-क्षितिज. जू-ए-रवाँ=बहती हुई नदी. दयारे-हिज्र=जुदाई की दुनिया.

फ़र्द बाक़ी हैं ख़ानदान कहाँ
ढूँढ़ते है मकीं मकान कहाँ

अब ज़मीनों प' आस्मान कहाँ
धूप है सर प' सायबान कहाँ

अब हवाओं में हम मुअल्लक़ है
अपने होने का अब गुमान कहाँ

नापता हूँ नज़र से ऊँचाई
पर सलामत है पर उड़ान कहाँ

तुम हो ख़ामोश मैं भी गुमसुम हूँ
अब कोई अपने दर्मियान कहाँ

कागजी नाव है भरोसा क्या
इन जहाज़ों के बादबान कहाँ

फर्द=व्यक्ति. सायबान=धूप से बचाने वाला कपड़ा, छत्ता
मुअल्लक=लटके हुए, त्रिशंकु की तरह. गुमान=भ्रम बादबान=
नाव पर बांधा जाने वाला कपड़ा, जिस में हवा भरती है-पाल.

किसी को कुछ न बताओ किसी से कुछ न कहो
सभी से खुद को छुपाओ किसी से कुछ न कहो

घरों मे लूट के सफ़र में रहो लुटेरों — से
हक़ीक़तों को छुपाओ किसी से कुछ न कहो

सभी की सब से अदावत है और मुहब्बत भी
सभी से हाथ मिलाओ किसी से कुछ न कहो

हरेक हाथ में खंजर है, तुम को क्या मतलब
तुम अपनी खैर मनाओ किसी से कुछ न कहो

मौजे-हवा से फूलों के चेहरे उतर गये
गुल हो गये चिराग़ घरौन्दे बिखर गये

पेड़ों को छोड़ कर जो उड़े उन का जिक्र क्या
पाले हुए भी ग़ैरों की छत पर उतर गये

यादों की रुत के आते ही सब हो गए हरे
हम तो समझ रहे थे सभी जख़्म भर गये

हम जा रहे है टूटते रिश्तों को जोड़ने
दीवारो-दर की फ़िक्र मे कुछ लोग घर गये

चलते हुओं को राह में क्या याद आ गया
किस की तलब में क़ाफ़िले वाले ठहर गये

जो हो सके तो अब के भी सागर को लौट आ
साहिल के सीप स्वाति की बूंदों से भर गये

इक एक से ये पूछते फिरते है अब 'निजाम'
वो ख़्वाब क्या हुए, वो मनाजिर किधर गये

मौजे-हवा=हवा की लहर. दीवारो-दर=दीवार और दरवाज़ा. मनाज़िर=मंज़र का बहुवचन.

रेत पर जितने भी नविश्ते हैं
अपने माहौल के मुजल्ले हैं

कौन जाने कहाँ दफ़ीने हैं
अपने तो पास सिर्फ़ नक़्शे हैं

सूरतें छीन ले गया कोई
इस दफ़ा आईने अकेले हैं

ख़्वाब, ख़ुशबू, ख़याल और ख़दशे
एक दीवार सौ दरीचे हैं

दोस्ती, इश्क़ और वफ़ादारी
सख़्तजाँ मे भी नर्म गोशे हैं

पढ़ सको तो कभी पढ़ो उन को
शाख़ - दर - शाख़ भी सहीफ़े हैं

जुगनुओं के परों से लिक्खे हुए
जगलों में कई जरीदे हैं

नविश्ते=लिखावटें. मुजल्ले=पत्रिकाएँ. दफ़ीने=ख़जाने. ख़दशे=अनिष्ट की आशंका. सख़्तजाँ=कठोर हृदय. गोशे=कोने. शाख़-दर-शाख़=टहनी-टहनी में. सहीफ़े=आसमान से उतरी हुई किताबें. जरीदे=ख़बरनामे

मकानों के थे या ज़मानों के थे
अजब फ़ासले दर्मियानों के थे

सफ़र यूँ तो सब आस्मानों के थे
क़रीने मगर क़ैदख़ानों के थे

खुली आँख तो सामने कुछ न था
वो मंज़र तो सारे उड़ानों के थे

मुसाफिर की नज़रें बुलन्दी प' थीं
मगर मरहले सब ढलानों के थे

उफ़ुक़ ज़ेरे-पा था, फ़लक सरनगूँ
तिलिस्मात कैसे तकानों के थे

पकड़ना उन्हें कुछ ज़रूरी न था
परिन्दे सभी आशियानों के थे

उन्हें ढूँढ़ने तुम कहाँ चल दिये
वो किरदार तो दास्तानों के थे

मकानों=अंतरिक्षों. ज़मानों=काल (समय) का बहुवचन. मरहले=मोड़. उफ़ुक़=क्षितिज. ज़ेरे-पा=पाँव के नीचे. फ़लक=आकाश. सरनगूँ=सर झुकाये हुए. तिलिस्मात=जादू का बहुवचन. किरदार=चरित्र.

मंजिलों का निशान कब देगा
आह को आस्मान कब देगा

अज़्मतों का निशान कब देगा
मेरे हक़ में बयान कब देगा

ज़ुल्म तो बेज़बान है लेकिन
ज़ख़्म को तू ज़बान कब देगा

सुब्ह सिज्दे समेटे सोई है
पर अन्धेरा अज़ान कब देगा

इन ठिठरते हुए उजालों को
धूप-सा सायबान कब देगा

मौजे-माही निगल न जाए कहीं
नूह-सा निगहबान कब देगा

मुझ को जंगल दिया है जीने को
बुज़दिलों को मचान कब देगा

बस यही पूछना है उस से 'निज़ाम'
पर दिये हैं उड़ान कब देगा

अज़्मतों=महानताओं. अज़ान=बुलाना, आवाज़ देना. सायबान=धूप से बचाने वाला. मौजे-माही=मछली रूपी लहर. नूह=एक पैग़म्बर, जिन्होंने प्रलय के समय मनु की तरह नाव बना कर सृष्टि की रक्षा की.

क्या किसी को उस के दर से वास्ता कोई नहीं
उस दरीचे की तरफ़ क्यूं देखता कोई नहीं

गर्दिशें ही गर्दिशें है गर्द में लिपटी हुई
क्या तुम्हारे शहर में भी अहले-पा कोई नहीं

डूबते तारों की किरनें सो रही है बेखबर
चीखती है खामुशी और जागता कोई नही

चाहतो के चाँद जाने किस खला में खो गये
क़ुर्बतों के कर्ब में मेरे सिवा कोई नही

जिन्दगी-सी चीज तक दे डालते जिस के लिए
उस शजर की छाँव में अब ठहरता कोई नहीं

दूर तक मेरे ही सिज्दो के दिये है राह में
आस्तां कोई नहीं और नक़्शे-पा कोई नहीं

कुछ निराले ही हमारे शहर के आदाब हैं
रहगुजर इतने हैं लेकिन रास्ता कोई नहीं

गर्दिश=चक्कर अहले पा=पाँव वाले. खला=शून्य. क़ुर्बतो=सामीप्यो.
कर्ब=दुख. शजर=पेड. नक्शे-पा=पद चिह्न. आदाब=नियम, दस्तूर,

दरीचा राह कोई देखता है
दिया दहलीज़ पर बुझता हुआ है

न मंज़िल है न कोई नक़्शे-पा है
यहाँ तो फ़ासला ही फ़ासला है

हमारे साथ क्या-क्या हो गया है
मिला तुम से तो अन्दाजा हुआ है

ज़माने भर को रुसवा करने वाला
मिरी ख़ातिर बहुत रुसवा हुआ है

बनाऊँगा मैं उस से क्या बहाना
वो मेरे सब बहाने जानता है

जरा सी बात थी तेरा बिछड़ना
जरा सी बात से क्या कुछ हुआ है

किसी की ज़िन्दगी हम जी रहे हैं
हमारी मौत कोई मर रहा है

नक़्शे-पा=पद चिह्न. रुसवा=बदनाम.

वो कुछ इस तरह चाहता है मुझे
अपने जैसा बना दिया है मुझे

इस तरह उस ने ख़त लिखा है मुझे
जैसे दिल से भुला चुका है मुझे

गर नही चाहता तो पिछले पहर
क्यूं दुआओं में माँगता है मुझे

जिस प' फलते नहीं दुआ के पेड़
उस ज़मीं से पुकारता है मुझे

तख़्लिये में न जाने कितनी बार
लिखते-लिखते मिटा चुका है मुझे

लम्हा-लम्हा उगाने की धुन में
क़तरा-कतरा डुबा रहा है मुझे

वास्ता दे के मौसमों का 'निज़ाम'
वो दरख़्तों से माँगता है मुझे

तख़्लिये=एकान्त. लम्हा-लम्हा=पल प्रतिपल. कतरा-कतरा=बूंद-बूंद.

मिलते जाते हैं जो क़तारों में
हैं सभी पाँचवें सवारों में

जब से छूटा है साथ सहरा का
हौसले आ गये हिसारों में

उम्र तेरा तवील अफ़साना
बट गया है कई शुमारों में

आँख का आब आबलों में है
मिट गई नस्लें रहगुज़ारों में

क्या पता शोर है कि सन्नाटा
गर्द सी कुछ है रेगज़ारों में

क़तारों=पंक्तियों हिसारों=परकोटों तवील अफ़साना=लम्बी कहानी. शुमारों=पत्रिका के अंकों आब=पानी आबलों=छालों नस्लें=पीढ़ियाँ. रहगुज़ारों=रास्तों. रेगज़ारों=रेगिस्तानों

अजनबी से आश्ना का आसरा बाक़ी रहा
टूटती दीवार पर अक्से-हिना बाक़ी रहा

उड़ते-उड़ते कौन जाने किस ख़ला में खो गया
शाख में उलझा हुआ इक घोंसला बाक़ी रहा

सो गये तकते हुए रस्ता मुसाफिर का मकीं
पर दिया दहलीज पर जलता हुआ बाकी रहा

उम्र भर चलते रहे दोनों मुख़ालिफ़ सम्त में
फिर भी उनके दर्मियां का फ़ासला बाक़ी रहा

कहना भी चाहूँ तो कैसे साफ सच उस को कहूँ
हाँ गले तो मिल लिये लेकिन गिला बाक़ी रहा

जाने कैसे मोड़ थे वो क्या कहूँ तुझ से 'निजाम'
क़ुर्ब में भी दूरियों का दायरा बाक़ी रहा

आश्ना=परिचित अक्से-हिना=मेहन्दी लगे हाथ की छाप. ख़ला=शून्य.
मुख़ालिफ़ सम्त=विपरीत दिशा. क़ुर्ब=सामीप्य. दायरा=वृत्त.

मिलते जाते हैं जो क़तारों में
है सभी पाँचवें सवारों में

जब से छूटा है साथ सहरा का
हौसले आ गये हिसारों में

उम्र तेरा तवील अफसाना
बट गया है कई शुमारों मे

आँख का आब आबलों मे है
मिट गईं नस्लें रहगुज़ारों में

क्या पता शोर है कि सन्नाटा
गर्द सी कुछ है रेगजारों में

कतारो=पंक्तियो. हिसारो=परकोटो तवील अफसाना=लम्बी कहानी शुमारों=पत्रिका के अंको आब=पानी आबलो=छालो नस्लें=पीढ़ियाँ रहगुजारो=रास्तो रेगजारो=रेगिस्तानो.

अजनबी से आश्ना का आसरा बाक़ी रहा
टूटती दीवार पर अक्से-हिना बाकी रहा

उड़ते-उड़ते कौन जाने किस ख़ला में खो गया
शाख में उलझा हुआ इक घौंसला बाक़ी रहा

सो गये तकते हुए रस्ता मुसाफ़िर का मकीं
पर दिया दहलीज पर जलता हुआ बाक़ी रहा

उम्र भर चलते रहे दोनों मुखालिफ सम्त में
फिर भी उनके दर्मियां का फ़ासला बाक़ी रहा

कहना भी चाहूँ तो कैसे साफ सच उस को कहूँ
हाँ गले तो मिल लिये लेकिन गिला बाक़ी रहा

जाने कैसे मोड थे वो क्या कहूँ तुझ से 'निजाम'
क़ुर्ब में भी दूरियों का दायरा बाक़ी रहा

आश्ना=परिचित. अक्से-हिना=मेहन्दी लगे हाथ की छाप. ख़ला=शून्य.
मुखालिफ सम्त=विपरीत दिशा. क़ुर्ब=सामीप्य. दायरा=वृत्त

दर्दो-ग़म का घना अन्धेरा था
पर नज़र में किसी का चेहरा था

उन की ताबीर और क्या होती
ख़्वाब जो भी था वो अधूरा था

आँखें जैसे ग़ज़ल के दो मिस्रे
इक सरापा किताब जैसा था

गाँव के घर तो छोटे थे लेकिन
चाँद छत से दिखाई देता था

उन के चेहरे कभी न यूँ भीगे
कोई फूलों से मिल के रोया था

छोड़ कर वो मुझे कहाँ जाता
वो भी मेरी तरह अकेला था

कोई आवाज़ आ रही थी 'निज़ाम'
मुड़ के देखा तो अपना साया था

दर्दो-ग़म=दर्द और दुख   ताबीर=स्वप्न फल.
मिस्रे=काव्य पंक्तियाँ सरापा=सर से पाँव तक.

बहूरे - हस्ती को बेकरानी दे
नक़्शे-अव्वल हूँ, नक़्शे-सानी दे

दे हमें रात रतजगों वाली
ज़िन्दगी दे तो ज़िन्दगानी दे

चाक भी कर ज़मीर की ज़ुल्मत
फिर हमें नूरे-कहकशानी दे

मुन्हरिफ़ हो रहे हैं सब तुझ से
अपने होने की फिर निशानी दे

अब पयम्बर कहाँ है पास तिरे
अब की पैग़ाम तू ज़बानी दे

अपने बच्चों को क्या सुनाऊँगा
कोई क़िस्सा, कोई कहानी दे

बहूरे-हस्ती=जीवन-सागर. बेकरानी=बेचैनी, तरंगें. नक्शे-अव्वल=प्रथम चिह्न, पहला सर्जन. नक्शे-सानी=दूसरा चिह्न. चाक=फाड़ना जमीर=आत्मा. जुल्मत=अंधेरा. नूरे-कहकशानी=ईश्वरीय प्रकाश. मुन्हरिफ=विमुख. पयम्बर=पैगम्बर, इस्लामी विश्वास के अनुसार हजरत मुहम्मद अन्तिम पैगम्बर हैं.

पत्तियाँ हो गईं हरी देखो
ख़ुद से बाहर भी तो कभी देखो

फिर खिली क्या कोई कली देखो
शोर है क्यूं गली-गली देखो

याद और याद को भुलाने में
उम्र की फ़स्ल कट गई देखो

मार कोई शिकार पर निकला
दश्त में रोशनी हुई देखो

रात की राख मुंह प' मल-मल कर
सुब्ह कितनी सँवर गई देखो

सुब्ह की फ़िक्र बाद मे करना
रात कितनी गुजर गई देखो

ज़िन्दगी किस तरह तुम्हारी 'निज़ाम'
उलझनों से उलझ गई देखो

मार=साँप. दश्त=जंगल

किस तर्ज प' होती है सना सोच रहा हूँ
खामोश खड़ा हर्फ़े-दुआ सोच रहा हूँ

क्यूँ भूल गया हम्दो-सना सोच रहा हूँ
क्यूँ शल से हुए सौतो-सदा सोच रहा हूँ

ताहद्दे-नजर एक खला फैली हुई है
देता है मुझे कौन सदा सोच रहा हूँ

ऐसा है कि वैसा है कि वैसा है कि ऐसा
कैसा है खुदा जाने खुदा सोच रहा हूँ

मैं देख चुका यादों के इक-एक वरक़ को
लिक्खा था कहाँ तेरा पता सोच रहा हूँ

अब तू जो मिला है तो मुझे याद नहीं है
किस बात का तुझ से था गिला सोच रहा हूँ

टूटी है अना उस की कि पिन्दार पसीजा
किस वास्ते खत उस ने लिखा सोच रहा हूँ

सना=स्तुति हर्फ़े-दुआ=प्रार्थना के अक्षर. हम्दो-सना=ईश्वर का गुण गान शल=निढाल. सौतो-सदा=स्वर और पुकार ताहद्दे-नजर=दृष्टि सीमा तक. खला=शून्य. वरक़=पृष्ठ. अना=अहंकार. पिन्दार=घमण्ड.

धूप बारिश की बरकतें माँगे
रहमतों की रिवायतें माँगे

ख़्वाब करने को ख़िल्वतें माँगे
अहदे-माज़ी की बरकतें माँगे

गर्म रातों से राहतें माँगे
शहर किस से खुली छतें माँगे

आँख आईना सूरतें माँगे
हैरतों जैसी हैरतें माँगे

देखिये तो सदा के सहरा से
कान क़ुरआँ की क़िर्अतें माँगे

क़द्र के साथ घटते क़द हम से
ऊँची - ऊँची इमारतें माँगे

बरकतें=सौभाग्य, कल्याण. रहमतों=ईश्वरीय कृपाएँ. रिवायतें=परम्पराएँ. ख़िल्वतें=एकान्त अहदे-माज़ी=अतीत. राहतें=आराम. सदा=पुकार, आवाज़. क़िर्अतें=पढ़ने का भाव, शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ना.

रास्ते में वो मिला अच्छा लगा
सूना-सूना रास्ता अच्छा लगा

उस ने जाने क्या कहा अच्छा लगा
बादे-मुद्दत आईना अच्छा लगा

उस ने जाने क्या कहा अच्छा लगा
रुकते रुकते बोलना अच्छा लगा

कितने शिकवे थे मुझे तकदीर से
आज क़िस्मत का लिखा अच्छा लगा

मुझ में क्या है मुझ को कब मालूम है
वो ही जाने उस को क्या अच्छा लगा

उस की सूरत से लगा मुझ को 'निजाम'
उस को मेरा देखना अच्छा लगा

बादे-मुद्दत=लम्बे समय के बाद.

मन रख के अपना गुम्बदे-बेदर के आस पास
इक सांप घूमता है गुले-तर के आस पास

अक़्रब की आग, ग़ैरते-अफ़ई को खा गई
क्या ढूंढते है लोग समुन्दर के आस पास

आफ़ाक़ के क़रीब से देखो तो अन्कबूत
फैला रही है पांव कलैण्डर के आस पास

चूहे के दांत से कभी तोते की चोंच से
इक दिन पहुँच ही जायेगा पत्थर के आस पास

गुम्बदे-बेदर=बिना दरवाज़े का गुम्बद, आकाश. गुले-तर=ताज़ा फूल. अक़्रब=बिच्छू. ग़ैरते-अफ़ई=सांप का आत्म-सम्मान. आफ़ाक़=क्षितिजों अन्कबूत=मकड़ी.

कई शक्लों में ख़ुद को सोचता है
समुन्दर पैकरों का सिलसिला है

बदलती रुत का नोहा सुन रहा है
नदी सोई है जंगल जागता है

बिखरने वाला ख़ुद मंजर-व-मंजर
मुझे क्यूँ जर्रा-जर्रा जोड़ता है

हवा का हाथ थामे उड़ रहा हूँ
हवा फ़ासिल हवा ही फ़ासला है

हुदूदे-अर्ज़ में गुम होने वाला
उफ़ुक़ को इम्काँ-इम्काँ जानता है

पैकरों=बिम्बों. नोहा=विलाप, शोक-गीत. मंज़र-व-मंज़र=दृश्य-दृश्य. ज़र्रा-ज़र्रा=कण-कण. फ़ासिल=जिस के कारण दूरी बढ़े. हुदूदे-अर्ज़=धरती की सीमा. उफ़ुक़=क्षितिज. इम्काँ-इम्काँ=सम्भावित सम्भावना

मैं ने तो ऐसा कोई मंजर कभी देखा न था
दिन ढला जाता था और साया कोई लम्बा न था

फिर तो उस के सामने जैसे कोई रस्ता न था
जीतने वाला कभी यूँ हौसला हारा न था

लोग तो कहते थे लेकिन मैं भी तो अंधा न था
मैं ने खुद देखा है मेरे धड़ प' भी चेहरा न था

रोकना चाहा था मैं ने वो भी रुक जाता मगर
एक झोंका था हवा का वो ठहर सकता न था

कितने ही कच्चे घड़े लहरों को याद आने लगे
साहिलों के होंटों पर ऐसा कभी नोहा न था

गोद मे माँओं की बच्चे रात भर रोते रहे
पास पूतोंवालियों के क्या कोई किस्सा न था

मंजर=दृश्य. साहिलों=किनारों. नोहा=शोक-गीत.

गझल

समुन्दर : चार

समुन्दर !
तुम्हारे सीने पर
बिखरती
किरन किरन
सुब्ह है
या सहीफ़ों के
ओराक़े-परीशाँ

चमचमाते चेहरे पर
शिकन दर शिकन
गुंजलक ख़ुतूत
तज्रिबों की तमाजत का तिलिस्म
या तुम्हारी शिकस्तख़ुर्दा ख़्वाहिशों की दास्तों के
हाँपते जाते हुरूफ़ ?

समुन्दर !
शुआएँ तुम से मिल कर हो गई हैं
पाश...पाश
या इन्हें जम कर के ख़ुद में

सहीफ़ों=आसमानी किताबों. ओराक़े-परीशाँ=बिखरे हुए पृष्ठ. शिकन-दर-शिकन=सिलवटों से भरा हुआ. गुंजलक=अस्पष्ट. ख़ुतूत=ख़त का बहुवचन-रेखाएँ. तज्रिबों=अनुभवों तमाजत=गर्मी. तिलिस्म=जादू. शिकस्तख़ुर्दा=पराजित हुई. हुरूफ़=हर्फ़ का बहुवचन-अक्षर. शुआएँ=किरणें. पाश-पाश=टुकड़े-टुकड़े. जम=अपने में समो लेना.

तुम ने ही
यूँ कर दिया है
मुक़सिम ?

ये तुम्हारे रंग ही के रूप है
या रूप के है रंग इतने
कौन जाने !
तुम तो कुछ कहते नही हो !

क्या समुन्दर होना कुछ कहना नही है !

मुक़सिम=बाँटना।

समुन्दर : पाँच

समुन्दर !
तुम अजल से गुनगुनाते जा रहे हो
मैं अजल से सुन रहा हूँ
एक ही नग़मा ?
एक-सी ही बहर
लफ़्ज़ भी वैसे के वैसे ?

आहंग का मद्दो-जजर तो वो नही है
जो अभी था
फिर ये कैसे हो कि
तुम अजल से गुनगुनाते
एक ही लय में
एक ही नग़मा
और अगर हो भी तो क्या
एक ही लय में
मुख़्तलिफ़ नग़मों की है तख़्लीक़ मुम्किन
एक ही नग्मा
अनगिनत आहंग में भी गुनगुना सकते हो तुम तो ।

अज उफ़क़-ता-उफ़क़
फैली
इक समाअत सोचती है
क्या अजल से गुनगुनाये जा रहे हो
ये बताओ !

अजल=आदि काल. बहर=छन्द. आहंग=राग. मद्दो-जजर=उतार-चढ़ाव. मुख़्तलिफ़=विभिन्न. तख़्लीक़=सर्जन अज उफ़क़ ता उफ़क़=क्षितिज से क्षितिज तक. समाअत=श्रवण

समुन्दर : छह

किसलिए
इतने खफ़ा हो !
क्यूं नही आवाज देते ?

गर्दिशों के ग़ोल में
तन्हाइयों के तग होते
दायरे-दर-दायरे
फैलते
चारों तरफ़
तामीर करते
एक ही जैसे
हिसारे-हिज्र

तुम जो चाहो तो
किनारों से लिपट कर
फूट सकते हो

सर फोड़ सकते हो
चटानों से
तुम को तो चट्टान से हमदम मिले हैं
तुम कहां समझोगे मेरे अल्मिये को !

गर्दिशों=चक्करों, ग़ोल=झुण्ड, तग=सकुचित दायरे-दर-दायरे=वृत्त में वृत्त तामीर=निर्माण हिसारे-हिज्र=वियोग का परकोटा अल्मिये=त्रासदी.

तुम नहीं समझोगे मेरे अलिमये को तो
समुन्दर
कौन समझेगा ?
जब्त की जंजीर हो या
वो सलासिल सब्र की
मुख़्तलिफ़ कब
जब है वस्फ़े-मुश्तरिक
हम को वस्फ़े-मुश्तरिक ही बांधता है

क्यूं नहीं आवाज फिर देते
मुझे
तुम
जिस तरह आवाज देता जा रहा हूँ
मैं
हरिक मू-ए-बदन से ?

जब्त=सहनशीलता. सलासिल=बेडी. मुख्तलिफ=भिन्न.
वस्फे-मुश्तरिक=समान गुण मु-ए-बदन=शरीर के रोम.

एक शाम : एक मंज़र

बिलखती हवाओं के हाथों मे
ज़ख़्मख़ुर्दा पत्ते
कुहर में
गुमशुदा दैर की गूँजती घण्टियाँ
खौफ़ से साकित
बिन परिन्द के पेड़

ज़ख़्मख़ुर्दा=घाव लगे. कुहर=कोहरा. गुमशुदा दैर=खोया हुआ, अदृश्य मन्दिर. साकित=निश्चल.

तज़बज़ुब

सच बताओ
जो किताबों में लिखा है —
क्या वो तुमने ही कहा है ?

जब अजीयत जिस्म से रिसने लगेगी,
जब दुआ को उठने वाले हाथ
शल होने लगेंगे
और शल होते हुए हाथों को
काट डाला जायेगा शानों से मेरे
जब सिना की सौत—
फूंक डालेगी लबों को ।
आरज़ू में, आबलों-सी आँखें
नेजे फोड़ देंगे
और गला—बंजर ज़मीं-सा
कुछ न देगा हाथ में आवाज के तो
काट डालेगा कोई सर धड़ से मेरा

तज़बज़ुब=असमंजस अज़ीयत=कष्ट. शल=निर्जीव. शानों=कंधों,
सिना=प्रार्थना. सौत=स्वर. आबलों-सी=छालों जैसी. नेज़े=भाले।

तुम
सिमट कर रंगो-बू में
खाको-खूं में
सूर फूंकोगे हवा में ?
...
'कुन' कहोगे ?
क्या तुम्हारा ही कहा है
जो किताबों में लिखा है
सच बताओ !

रंगो-बू=रंग और गंध. खाको-खूं=मिट्टी और रक्त. सूर=शंख कुन=क़ुरआन की एक आयत का संक्षिप्त शब्द अर्थात् ईश्वर ने कहा 'होजा', अस्तित्व में आ, और हो गया.

तज्वीज़

शराफ़तों के सिरोपा
उतार कर फेंकें
चलें
सड़क प' जरा घूमें
फ़िक़्रे चुस्त करें
किसी को बेवज्ह छेड़ें
हँसी उड़ायें
बुलायें
बुला के प्यार करें

सतायें
रास्ते चलते किसी मुसाफ़िर को
ग़लत पता दें।
सड़क के बीच चलें
गत्ते का डिब्बा पा के इतरायें
लगायें ठोकरें
फ़ुटबॉल मान कर उस को
लगे किसी के जो जा वो तो
इधर-उधर झाकें
अनजान बनें।

सुनें न हॉर्न कोई ...
और मरते-मरते बचें कि
बचते-बचते हुए मरते उम्र बीत गई!

तज्वीज़=उपाय, सलाह. सिरोपा=एक प्रकार का सम्मान.

बात मगर बाक़ी रहे

साहिबो !
देखते हो
रात अभी बाक़ी है
और अगर रात नही बाक़ी तो
हम बाकी हैं ।

कितने गम, कितने अलम, कितने ही यादों के मकाँ
जिन में आबाद हैं हम सब के मिटे नामो-निशाँ
—वहमो-गुमाँ—

रात की राख से कब किश्ते-अलम कटती है
दूधिया दुख है, वो पैग़ामे-मुसर्रत कब है
और पैग़ामे-मुसर्रत भी मुसर्रत कब है ।

साहिबो !
रात का क्या
आज अगर खत्म न होगी वो कभी तो होगी
रात से रात निकलती है न निकलेगी कभी
बात से बात निकलती है
चली जाती है

रात बाक़ी न रहे बात मगर बाक़ी रहे
बात बाक़ी है तो हम लोग सभी बाक़ी है

अलम=कष्ट. नामो-निशाँ=नाम और स्मृति-शेष वहमो-गुमाँ=भ्रम और सदेह.
किश्ते-अलम=कष्ट की खेती. पैग़ामे-मुसर्रत=प्रसन्नता का सदेश, मुसर्रत=प्रसन्नता.

ख़्वाब की ख़्वाहिश

मेरी आँखों को अभी तक ख़्वाबनाक ख़िल्वतों से इश्क़ है
मुझे अल्लाह और इब्लीस के वजूद का इक़रार
मिरे हाफ़िज़े में
निबातात के नविश्ते और मौसमों की मूसीक़ी के
मख़्तूते महफ़ूज़ हैं

मिरे अल्फ़ाज़ में
अर्शे-आज़म तक पहुँचने की उम्मीद और उमंग
कानों को इल्हामी अहकाम सुनने की हसरत है।
आँखों की रिहूल पर
आँसुओं के मुसव्वदों को
देखने की ख़्वाहिश है

क्या ?
मुझे भी
इन सब को
तब तक ज़िन्दा रखना होगा
जब तक
गावे-सरा
कुर्रे-ए-अर्ज़ का बोझ सहने से इंकार न कर दे ?

ख़्वाबनाक=स्वप्निल. ख़िल्वतों=एकान्तों. इब्लीस=शैतान. वजूद=अस्तित्व. इक़रार=स्वीकार. हाफ़िज़े=स्मृति. निबातात=वनस्पति. नविश्ते=लिखित. मूसीक़ी=संगीत. मख़्तूते=प्राचीन हस्तलिखित पत्रादि. महफ़ूज़=सुरक्षित. अल्फ़ाज़=लफ़्ज़ का बहुवचन, शब्दों. अर्शे-आज़म=ईश्वर के सिंहासन का स्थान. इल्हामी=ईश्वर की ओर से हृदय में आई हुई बात. अहकाम=आदेश. रिहूल=लकड़ी का बना वह यंत्र विशेष जिस पर पुस्तक रखी जाती है. मुसव्वदों=किसी लेख का प्रारम्भिक रूप, प्रारूप. गावे-सरा=एक मान्यता के अनुसार पृथ्वी गाय के सींगों पर टिकी हुई है, उसी गाय का नाम. कुर्रे-ए-अर्ज़=पृथ्वी का गोला.

मश्वरा

वो कुछ नहीं करेंगे
उन्हें कुछ करना ही कब है

छपे हुए हुरूफ़ हों, बर्क़ी-सदा की बोलती तस्वीरें
सब एक ही ज़हन से सोचते हैं
एक-सी ज़बान में बोलते हैं

उन के आँसुओं से
पसीने की बदबू आती है।
जो कुछ हैं
वो सब कुछ के मुतमन्नी है
जो कुछ नहीं हैं
वो कुछ होना चाहते हैं

जो उन की तरफ़ नहीं हैं
वो अपनी ही तरफ़ हैं
हमारी तरफ़ नहीं है

रस्साकशी है।
उन के लिए
हम मैदाने-जंग है

हुरूफ़=हर्फ़ का बहुवचन, अक्षर. बर्क़ी-सदा=बिजली से उत्पन्न आवाज़. मुतमन्नी=अभिलाषी. मैदाने-जंग=रण-भूमि.

फ़त्ह हो कि शिकस्त
रौंदे हमी जायेंगे
हमारी मौतों पर रोने से
उन की उम्रों में इज़ाफ़े होते हैं
उन की दराज़ी-ए-उम्र के लिए भी
हमारा मरना ज़रूरी है।

बहुत हुआ
मज़ीद भरोसा मत करो
जो करना हो ख़ुद करो

फ़त्ह=जय. शिकस्त=पराजय. इज़ाफ़े=वृद्धियाँ.
दराज़ी-ए-उम्र=दीर्घायु. मज़ीद=और, इससे अधिक.

रंगों का तक़द्दुस

मुझे सब ख़बर है
उसे भी पता है कि
अब वुसअतों में नहीं और कुछ भी
फ़क़त वुसअतें है ।

हमे रंगों का इन्द्रजाली तकद्दुस
उठाये-उठाये
सफर की सऊबत यूँ ही झेलनी है ।

ख़बर है कि
ख़ुशबू का आकार कुछ भी नही है
पता है कि
लम्स इक क़बा ढूँढता है
नफस नेजों पर ही
हवाओं के सर को
उठाये - उठाये
यूँ ही घूमना है

वुसअतों=विस्तारों. तक़द्दुस=पवित्रता. सऊबत=शारीरिक कष्ट.
लम्स=स्पर्श. क़बा=परिधान. नफ़स=साँस. नेज़ों=भालों.

जब तक
कमींगाह से वो न निकले
खुशबू के ख़्वाबों की
फ़ितरत न बदले
रंगों का ये इन्द्रजाली तक़द्दुस न टूटे
सब कुछ पता है —
मगर मुत्मइन है।

कमींगाह=सुरक्षित स्थान, छिपने की जगह. फ़ितरत=प्रकृति मुत्मइन=सन्तुष्ट.

सायों के साये में

मुंतज़िर
मुशव्वशो-मुंतशिर
कितने मकानों की क़तारें
उस
खण्डहर की ओर
जो शायद कभी मा'वदकदा था
उन का
जिन के गुम होने से हैं
गुमसुम
सभी गलियां और
गुज़रगाहों प' मँडराता हुआ
आसेबी साया

मोड़ पर
रुकती, ठिठकती
अजनबी साये से
सहमी
कोई परछाईं पलटती
भागते क़दमों की आहट
डूब जाती
आवजू के
ठीक
बीचो-बीच

मुंतज़िर=प्रतीक्षित. मुशव्वशो-मुंतशिर=चिन्तित और बिखरे हुए मा'वदकदा=पूजा-स्थल. गुज़रगाहों=सड़कों. आसेबी=भूत-प्रेत सम्बन्धी. आवजू=नदी.

पुराने मन्दिर में शाम

अब तो वहाँ
निशान है
जहाँ
कभी देवता की मूर्ति रही होगी

शिकस्ता शहतीर में
फँसा
बचा
जंजीर का हल्क़ा
जिस में
शायद कभी घण्टी लटकती हो।

सहन में राख है
किसी ने आल जलाया होगा
रोशनी और गर्मी के लिए

दरकती दहलीज पर
रेवड़ से बिछड़ी
भेड़
पुराने सिज्दे चुनती है

पीले पायदानों पर
नक़्शे-पा उभरते हैं ...

शिकस्ता=टूटी हुई. शहतीर=सीधी और चौकोर लक्डी जो छत पाटने के काम आती है, लट्ठा हल्का=कड़ी. पायदानों=सीढ़ियां. नक़्शे-पा=पद-चिह्न.

मुंतज़िर

दूर से आती हुई
आहट
रहट की
धीरे-धीरे
फैलती जाती फ़िज़ा में

छोटे-छोटे
घुँघरुओं और घण्टियों की भी सदायें
जम हुई थीं
जो जमाँ में

मुंतज़िर
कितने मकानों में मकाँ
हुजर-ए-हिज्रत में गुम
जिन के मकीं
अहदे-गुजिश्ता के हैं
औराक़े-परीशां
आबजू के आईने में
मक़हूर और महजूर
महजर

जम=सम्बद्ध. जमाँ=काल, समय. मुंतज़िर=प्रतीक्षित. हुजर-ए-हिज्रत=प्रवास की कोठरी. मकीं=निवासी. अहदे-गुजिश्ता=बीता हुआ युग. औराक़ें-परीशां=बिखरे हुए पृष्ठ. आबजू=नदी. मक़हूर=दैवकोपग्रस्त. महजूर=वियोगी. महजर=पृथ्वी के गर्भ में छिपे पथरीले अस्थिपंजर, फ़ॉसिल.

सम्त का सहरा

कैसा लगता है अब
जब हो गये हैं
एक जैसे
चारों ओर छोर

सारबानों के कहीं
बैठते, उठते, मुड़ते, टूटते
सुर हैं
न ऊँटों के गले की घण्टियों की
दूरियों के दरियाओं में
धीरे-धीरे
डूबती
गूँजें

न कहीं
खच्चरों प' बैठीं
ख़्वाब बुनती
खानाबदोश दोशिज़ाएँ —

सम्त=दिशा. सहरा=निर्जन उजाड़ स्थान. दोशिज़ाएं=कुआरियाँ.

जिन के
विरहे सुनने
ठहर जाता था
सावन
तुम्हारे सहन में भी

शौक़ की तकमील करने
शुतुर पर
शब ही की शब में
दरियाई सहराई सफ़र कर
लौटने वाले
दिलावर भी नही
(कुछ भी नहीं)
पसरती सम्तों में
घूरती तन्हाइयों को
जर्द आँखें
तुम्हारी

पल पल फैलती जाती
एक पीली साय सांय ....

सहन=आँगन. शौक=रुचि, प्रेम. तकमील=पूर्ति शुतुर=ऊँट. शब ही की शब में=रातो रात. दरियाई=जल से सम्बन्धित (जल मार्ग). सहराई=मरु से सम्बन्धित (मरु मार्ग). दिलावर=प्रेमी. सम्तों=दिशाओं. जर्द=पीली.

सभी वैसे का वैसा है

सभी कुछ वैसे का वैसा है
कहीं कुछ भी नही बदला

दूर से आवाज देतीं
महरावें,
दवजाएँ,
नुकीले और गोल गुम्बद
गुटरगू करते कबूतर

टूटते बिखरते
किले की
मुन्हदम बुर्जियों प'
उगी जली घास

बरसाती नाले की नाफ़ से निकलती
पगडण्डी पार
कोठार
गाडोलिये लोहार

मुन्हदम=पुरानी, गिरती हुई. नाफ=नाभि.

घना-छितनार
पेड़ पीपल का
ऊँघती अलसाई सड़क—
मकान की,
पहली मंज़िल की
जंगख़ुर्दा सलाख़ से मुकसिम
मुन्हमिक ख़्वाबगूं खिड़की
टूटती - गिरती शाम की रोशनी में
सैय्याल शरारों की
टेढ़ी मेढ़ी लकीरों को
देखती
चुपचाप

सूरज की पहली किरन
गडमड लकीरों को सुखाती . . .

जंगख़ुर्दा=जंग लगी. मुंकसिम=बटी हुई. मुन्हमिक=मग्न.
ख़्वाबगूं=स्वप्निल. सैय्याल=द्रव में परिवर्तित. शरारे=चिन्गारी.

दीमक और दिन रात

कहाँ - कहाँ से
बटोरते फिरोगे
इबारतें —
बदबू पर बँधते नहीं बाँध
सायों की सय्याहत में
दीमकों-से
चाटते रहोगे दिन रात
कब तक ?

मेरी मानो
खामोशी के खार चुनो
चुपके-से जीओ और
चले जाओ !

सच का संदूक़

वंद
संदूक़ में
रोता हुआ
आवाज किस को दे रहा था
मैं !

एक आहे-सर्द में ढल गई
वो तलाशो-जुस्तजू
तो कह रही हो तुम—
मैं तुम्हारे शिकम की पहली शिकन हूँ
ख़्वाब हूँ ख़ुर्शीद का
. . .
पर तबीअत ने तुम्हारी
इस दफ़ा
ताजील की ऐवज़ में क्यूँ ताख़ीर कर दी ?

आहे-सर्द=ठण्डा निश्वास. तलाशो-जुस्तजू=खोज और छानबीन.
शिकम=पेट. शिकन=झुर्री, सिलवट. ख़ुर्शीद=सूर्य.
ताजील=जल्दी. ऐवज़=बदले. ताख़ीर=देरी, विलम्ब.

तुम ! मिरी धरती !!
सह सकी इतने बरस तक
लातअल्लुक़ उन्स की तकलीफ़
किस तरह ?

मुहताज है
मामता भी
मस्लहत की
क्यूं बताई ये सदाक़त ?

लातअल्लुक=असम्बन्ध. उन्स=लगाव. मामता=ममता. मस्लहत=अपने हितों को ध्यान मे रखते हुए कोई काम करना. सदाकत=सच्चाई.

पहाड़ पेड़ पगडण्डी

पहाड़ों की बुलन्दी पर
बनती पगडण्डियाँ
मौसमों के आने जाने से

पेड़ों को तो मिट्टी रोकना है।

आंख आंसू ख़्वाब

आँख और आँसू में रिश्ता
कुछ नहीं
पोंछने वाला अगर कोई न हो

खुदगरज ख़्वाबों
ये तुम क्या कह रहे हो ?

मैले मौसम

आवेज़ा है
आईने
चारों तरफ़
          क़तारों मे
वक़्त से समुन्दर में
बूंद - बूंद
गिरते लम्हे
          कब से (के)
कटते काटते साये
मोहताज मौसम
          मैले ख़्वाबों से

मैं जीना चाहता हूँ अब बिना दिखते हुए ख़ुद को ।

आवेज़ा=लगे हुए, लटके हुए.

कैवेन्टर्स ईस्ट : एक

लॉन मे दूब है
दूब के पार
गुलाब के पौधे
पौधों की क्यारी के कोने पर
मुआनक़े में महूव
नीम के तनावर दरख़्तों पर
बड़ा-सा घोंसला है

लैला की झुकी शाख़ों में
बुलबुल का फँसा पर
फड़फड़ाता है...

कैवेन्टर्स ईस्ट=उस मकान का नाम जिस में अज्ञेयजी रहते थे.

मुआनक़े=गले मिलना महूव=तल्लीन.

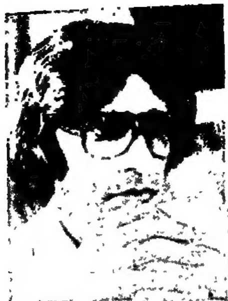
कैवन्टर्स ईस्ट : दो

उस दिन
जब गर्म दूध से जला अपना हाथ
मेरे काँधे पर रख
तुम ने खिंचवाई थी
तस्वीर
तो मुझे कहाँ मालूम था कि तुम
मुझे सब्ज-बाग़ दिखा कर
मेरे कमजोर काँधे कुव्वत की देख रहे हो !

अब तो ये सवाल भी पूछूँ तो किस से पूछूँ कि
क्या तुम ने उस वक़्त
काँधे की क़ुव्वत की कमजोरी भी भाँपी थी ?

नहीफो-नाजार काँधे पर
तुम्हारी पोरों के लम्स का लम्बा लम्हा
दूर तक फैला हुआ है और
मैं
तन्हा खड़ा हूँ...

क़ुव्वत=शक्ति. नहीफ=दुबला-पतला. नाजार=कमजोर लम्स=स्पर्श. तन्हा=अकेला



शीन. काफ़. निज़ाम

- 26 नवम्बर, 1947 को जोधपुर (राज.) में जन्म।
- कविता-संग्रह 'लम्हों की सलीब' और 'दश्त में दरिया' देवनागरी में प्रकाशित। 'नाद' उर्दू में प्रकाशित। उर्दू के बहुचर्चित काव्य संकलन 'शीराज़ा' और 'मेयार' मे सम्मिलित।
- भारत-पाक की उर्दू पत्रिकाओं मे आलोचनात्मक निबन्धों के अतिरिक्त हिन्दी से उर्दू तथा उर्दू से हिन्दी में आधुनिक कविता का अनुवाद।
- पता : कल्लो की गली, जोधपुर (राज.)।